वन्य जीवन की मिजो रामकथा

डॉ. मुनीन्द्र मिश्र

रामायण पूरे भारतदेश की सांस्कृतिक पहचान है। यह भारतीय सामाजिक संरचना का एक सुंदर चित्र है, जो विगत कई शताब्दियों से भारतीय जनमानस को दिशा दिखाता रहा है। भारत के परिवारों की पहचान रामायण के चरित्रों से होती है, वहीं से आदर्श मिलता है और वहीं से अपकर्ष भी पहचान में आता है। सारे संबंध रामायण में सुसज्जित हैं हर परिवार की तमन्ना होती है कि पुत्र राम सा मिले, बहू सीता जैसी, भाई भरत और लक्ष्मण से, माता कौशल्या सी, गुरु वशिष्ठ सा मिले और मित्र राम सुग्रीव सा। साथ ही सभी चाहते हैं कि कोई दासी मंथरा सी न हो, सौतेली माता कैकेयी सी न हो, भाई विभीषण न हो। एक प्रकार से देखें तो रामायण भारतीय सामाजिक ताने बाने को स्वरूप देता है।

रामायण यद्यपि उत्तर प्रदेश में स्थित अयोध्या के राजवंश की कथा है, तथापि यह कथा उत्तर से दक्षिण तक पूरे देश को स्पर्श करती है। राम का वन गमन भारत को सांस्कृतिक रूप से एक करता है। यहाँ तक कि भारत से अलग पाताल तक के राजा को अपनी कथा में समाहित रखता है। रामायण इस प्रकार न केवल भारतीय भू भाग को प्रेरित करता रहा है, बल्कि भारत से बाहर कई अन्य देशों में रामायण की कथा गाई, सुनाई एवं मंचित की जाती रही है। विशेष रूप से पूर्वी एशिया के देशों में रामायण मार्गदर्शक के रूप में माना जाता रहा है। मलेशिया जहाँ की आबादी मुख्यतया मुस्लिम है, वहाँ 'हिकायत सेरी रामा' नाम से रामायण की कथा गाई जाती है। वैसे ही म्याँनमार में 'यामा जामदाव' के नाम से, कंबोडिया में 'रामकेर' के नाम से, इंडोनेशिया के जावा में 'काकाविन रामायना', लाओस में 'फ्रा लाक फ्रा लाम', किंगडम ऑफ ला ना में 'फोम्माचाक' नाम से, फिलीपीन्स में 'महारादिया लवाना' व 'दारान्गेन ऑफ मिन्डानाओ' के नाम से, थाईलैंड में 'रामाकीन' जापान में 'रामायेन्ना' या 'रामायेन्सो' इसके अतिरिक्त चीन, कोरिया में भी रामायण के अपने संस्करण हैं। कोरिया में तो रामायण से विशेष लगाव माना जाता है। प्राचीन काल में वहाँ के राजा का विवाह अयोध्या की राजकुमारी से हुआ था, इसलिए वे स्वयं को रामायण से बहुत अधिक जुड़ा हुआ पाते हैं।

रामायण के लगभग 1000 भाषाई संस्करण दुनिया भर में मिलते हैं। भारत में लगभग प्रत्येक भाषाओं में रामायण की कथा है। उत्तर भारत, दक्षिण एवं पश्चिम भारत की रामकथाओं से सभी परिचित हैं, परन्तु पूर्व और पूर्वोत्तर भारत पर कम नजर गई है। पूर्वी भारत शक्ति की उपासना के लिए पहचाना जाता रहा है, इसलिए यहाँ रामायण की कथा के उतने अधिक संस्करण नहीं मिलते जितने शेष भारत में। बंगाल में मुख्य रूप से कृत्तिवास रामायण है, असम में रामयाण को माधव कंदली, अनंत कांडाली और रघुनाथ महंत ने असमी भाषा में रचा है, इसके अतिरिक्त अन्य कई रामकथाएं हैं इसके अतिरिक्त मणिपुर में रामायण की कथा विभिन्न रूपों में है। त्रिपुरा के राजपरिवार द्वारा बहुत पहले रामायण की कथा विद्वानों द्वारा बांग्ला में तैयार की गई थी।

पूर्वोत्तर भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति की पहचान यहाँ की जनजातियाँ हैं। यहाँ सैकड़ों जनजातियाँ पूरे क्षेत्र को रंगबिरंगी सांस्कृतिक पहचान देती हैं। ये जनजातियां मुख्य रूप से प्रकृति पूजक हैं। पिछले 200

वर्षों में इन जनजातियों का विविध रूप से शोषण हुआ, मुख्य रूप से इनकी मान्यताओं पर आघात पहुँचाया गया और भारत के विदेशी शासकों ने इनका धर्म परिवर्तन करवा करके इन स्वच्छन्द जनजातियों को इसाईयत के दायरे में समेटा है। यहाँ तक कि कई जनजातियों की अपनी पहचान तक समाप्त हो गई। नागा जनजातियाँ, खासी, गारो, मिजो, वांचो, तांग्सा, नोक्ते इत्यादि जनजातियों में पारंपरिक मान्यताओं को मानने वाले बहुत कम बचे हैं। शासकीय संरक्षण में मिशनरियों के निरंतर दबाव और लालच से बड़ी जनजातीय आबादी अपनी मूल पहचान समाप्त करने की ओर है।

मिजोरम भारत को पूर्वोत्तर कोने पर तीन ओर से म्याँमार और बांग्लादेश से जुड़ा एक छोटा सा परन्तु बहुत ही मनोरम पहाड़ी प्रदेश है। मिजो जनजातियों का निवास स्थल मिजोरम 21,087 वर्ग किमी में फैला है। मिजो जनजातियों को लुसाई जनजातियों के नाम से भी जाना जाता है। लुसाई पर्वत में यह प्रदेश फैला हुआ है। 1987 में यह पूर्ण राज्य बना। इस प्रदेश में वर्तमान में बहुसंख्यक जनसंख्या इसाई मतावलंबी है, इसके अतिरिक्त कुछ संख्या में बौद्ध धर्मावलंबी रहा करते हैं। पूर्व में यहां हिन्दू मान्यताओं को मानने वाले रियांग जनजाति के लोग रहा करते थे, परंतु बहुसंख्यकों द्वारा प्रताड़ित किये जाने के बाद ये मिजोरम छोड़कर त्रिपुरा में विस्थापित हो गये। यहाँ पर कुछ संख्या में यहूदी धर्म को मानने वाले भी हैं। यद्यपि इस प्रदेश में इसाईयत का जोर है, तथापि पारंपरिक मान्यताओं के प्रति भी लोगों में जागरुकता आ रही है जिसके अंतर्गत हनाम साखुआ का मत धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रहा है, जो पारंपरिक जनजातीय मत मानते हैं।

मिजो जनजातियों में रामकथा का अपना महत्व है। यहां पर रामायण लिखित रूप में उपलब्ध नहीं रहा है बल्कि लोकगीतों एवं लोककथाओं में रामायण कथाएँ कही जाती रही हैं। मिजो रामायण का मुख्य स्रोत मिजो लुसाई हिल्स के 1897 के तात्कालीन अधीक्षक श्री जे. शेक्सपीयर की लिखित 'लेह वाइक थोन थू' विषयक मिजो लोककथा संग्रह है, जिसमें जनजातीय रामकथा के विभिन्न हिस्से समाहित हैं। इस प्रकाशन में 10 लोककथा समाहित हैं, जिसमें 'खेना एंड रामा ते उनाऊ' के नाम से रामकथा संकलित है। यह रामकथा स्थानीय संस्कृति को समाहित किये हुए है, इसके कारण इसमें मुख्य रामकथा से व्यतिरेक भी है। जनजातीय समाज जंगलों में निवास करता रहा है, उसका नगरीय सभ्यताओं का बहुत परिचय नहीं रहा है इसलिए उनकी रामकथा में वनीय तत्व अधिक हैं। मुख्य कथा खेना और राम- ते उनाऊ थू (लक्ष्मण और राम की कहानी) यहाँ राम एवं खेना (लक्ष्मण) को देवता के रूप में मानते हैं। विभिन्न पारिवारिक एवं सामाजिक अवसरों में खेना और राम देवताओं का आह्वान किया जाता है। वहाँ मंत्रों में इस प्रकार इन्हें याद किया जाता है।

"जब केचुएँ ने पृथ्वी को संसार के निर्माण हेतु लिया
जब प्रकृति माता ने दुनिया तैयार की
तुम खेना और रामा द्वारा बनाये गये
सत्य के बारे में बताने के लिए
सत्य का गान करने के लिए।"

कृषि कार्य में इनकी पूजा का विशेष महत्व है। मिजो समाज में माना जाता है कि खेना और राम ने चावल का निर्माण किया, इसीलिए स्थानीय पुजारी बियाद्रू द्वारा धान की फसल लगाने से पहले खेना और रामा का आह्वान किया जाता है। बियाद्रू स्वच्छ चावल के दाने लेकर मंत्र बोलता है-

"आप धान के माता-पिता हो
आपकी जड़े विस्तृत भूमि में फैली हैं
.....x.....x.....x.....x.....
.....x.....x.....x.....x.....
जब प्रकृति माता ने दुनिया तैयार की
तुम खेना और रामा द्वारा बनाये गये
सत्य के बारे में बताने के लिए
सत्य का गान करने के लिए।"

मिजो रामायण बहुत छोटा है, जो मुख्य रामायण का सारांश सा है परंतु इस कथा के अपने अलग तत्व हैं। मिजो रामायण में राम और सीता के साथ खेना (लक्ष्मण), हावलामान (हनुमान), वानुमान (जांबवान), लुफिरॉबन (महिरावण), लुशरिहा (रावण) मुख्य पात्र हैं। कथा के आरंभ में राम व लक्ष्मण माँ के गर्भ में हैं वे वहाँ बात भी कर रहे हैं। बाहर आने पर राक्षसी तानू का भय है क्योंकि गर्भ से निकलते ही उन्हें खा लेगी। तानू से बचने के लिए उन्हें माँ के पैरों से बाहर आना पड़ता है। जिससे माँ का निधन हो जाता है। इस कारण उन्हें अकेले जीवन बिताना पड़ता है। युवा होने पर एक दिन उनकी जमीन में स्थित जल स्रोत से जल लेने एक देवता की पुत्री आती है। उसे हिरण समझकर राम तीर मार कर घायल कर देते हैं। इसके लिए उन्हें तीन साल का देवताओं द्वारा दंड दिया जाता है। इसी बीच रामा (राम) और खेना (लक्ष्मण) को पता चलता है कि दूर देश में सीता नाम की लड़की है, जो बहुत सुन्दर है। वह एक बॉक्स में मिली थी। सीता के विवाह के लिए उसके पिता ने शर्त रखी है कि जो उस बॉक्स को उठा लेगा, उससे सीता का विवाह होगा। कई लोग इसके लिए प्रयत्न करके असफल रहे। राम ने लोगों के निवेदन पर प्रयास किया और सहजता से बॉक्स उठा लिया और उनका सीता से विवाह हो गया। एक बार लसूरिहा (रावण) स्वर्ण-हिरण के रूप में राम और सीता के सामने आता है। सीता हिरण की सुन्दरता देखकर मोहित हो जाती हैं और वो राम से हिरण की खाल लाने को कहती हैं ताकि वो उसकी खाल की डिजाइन के कपड़े बुन सकें। हिरण का पीछा करते हुए राम वापस नहीं लौटते इसी तरह दो साल बीत जाते हैं तो सीता खेना (लक्ष्मण) को राम को ढूढ़ने भेजती हैं। लक्ष्मण राम को जंगल में अचेत पड़ा हुआ पाते हैं, उन्हें औषधि से ठीक करते हैं। इधर खेना के जाते ही लसूरिहा (रावण) सीता के पास भिखारी के रूप में आता है। सीता उसके पास आकर भिक्षा देने से मना कर देती हैं तो वह सुपाड़ी माँगता है। सुपाड़ी देते समय लसूरिहा जबरदस्ती आकर सीता का हरण कर लेता है और सीता को तुईहरियाम (समुद्र) पार ले जाकर रख देता है।

राम और लक्ष्मण सीता को घर में न पाकर ढूढ़ने निकलते हैं। राम और लक्ष्मण के हावलामान मित्र बन जाते हैं और उनकी सहायता करते हैं। हावलामान के साथी सीता की खोज में चारो ओर लग जाते हैं। एक दिन जब हावलामान सो रहे होते हैं तो लसुरिहा का पुजारी लुफिराबोन (अहिरावण) राम और लक्ष्मण का हरण वामनुमान (जांबवान) के रूप में आकर कर लेता है और उन्हें समुद्र के पार ले जाता है। वह राम और लक्ष्मण की बलि देना चाहता है तब हावलामान लुफिराबोन को मारकर तुईफूल (बलि) देने से पहले राम और

लक्ष्मण को छुड़ा लेते हैं। उसके बाद हावलामान पक्षी बनकर उड़ते हुए रावण के नगर में प्रवेश करते हैं, वहाँ जाकर वानर बनकर सीता से मिलते हैं और उन्हें राम की अँगूठी देते हैं। सीता प्रसन्न होकर उन्हें तीन संतरे देती हैं। दो राम व लक्ष्मण के लिए और एक हावलामान के लिए। हावलामान तीनों संतरे खा लेते हैं और सीता से कहते हैं भूख लगी है और संतरे दो। सीता संतरे का वृक्ष बता देती हैं, तब हावलामान संतरे खाने बाग में जाते हैं वहाँ उनकी बाग के पहरेदारों से लड़ाई होती है तो हावलामान के कहने पर पहरेदार उनकी पूंछ पर कपड़ा बांधकर तेल डालकर आग लगा देते हैं। जिसके बाद हावलामान लसूरिहा के नगर में आग लगा देते हैं।

इधर राम एवं खेना (लक्ष्मण) हावलामान की सेना के साथ एक बहुत बड़े सर्प की सहायता से समुद्र पार करते हैं। इनके निवेदन पर सर्प समुद्र में लेटकर पुल के रूप में काम आता है और पूरी सेना समुद्र पार कर जाती है। लसुरिहा को उसका बंधु युद्ध से बचने की सलाह देता है और सीता को वापस करने को कहता है पर लसुरिहा नहीं मानता उसका बंधु विरोध वश राम के पास चला जाता है। वह राम और खेना को लसुरिहा के अस्त्र-शस्त्रों एवं तकनीकी के बारे में की गोपनीय बाते बताता है युद्ध में राम घायल हो जाते हैं, तब हावलामान को रावण के औषधि के बाग से औषधि लेने भेजा जाता है जहाँ वह औषधि नहीं पहचान पाते और पूरा बाग ले आते हैं जिससे राम का जीवन बचता है। युद्ध में राम लसूरिहा(रावण) को मार डालते हैं। वापस घर आने पर राम सीता से रावण की मूर्ति बनाने को कहते हैं। सीता राम के जोर देने पर रावण की मूर्ति बनाती हैं जिससे राम समझते हैं कि सीता के मन में रावण है और वे सीता को घने जंगल में छोड़ देते हैं जहाँ सीता दो जुड़वा बच्चों को जन्म देती हैं बाद में राम की सीता के दोनो बच्चों से संघर्ष होता है तब बच्चों को पता चलता है कि वे राम के ही पुत्र हैं और सबका मिलन हो जाता है।

मिजो रामकथा में अपनी अलग कथावस्तु है। जो वाल्मीकी रामायण का सारांश ग्रहण करती है, परंतु उसमें वन्य तत्व अधिक विद्यमान हैं। जब यह कथा मिजो समाज में आई होगी तब निश्चित रूप से मिजो लोगों का नगरीय सभ्यता से परिचय न रहा होगा अत: अयोध्या का वर्णन उनके लिए तर्कसंगत न लगता होगा। इसलिए कथा में नगर का वर्णन नहीं राम एवं लक्ष्मण की बातें हैं पर न रानियों की बातें न भरत शत्रुघ्न की बातें। कथा में मुख्यतया दो भाई राम और लक्ष्मण ही हैं। सीता के धनुर्यज्ञ की बात वन में दूसरे रूप में पहुँची और पूर्व की कई कथाएं सीता को बक्से से मिला बताती हैं। सीता का वरण यहाँ भी शर्त जीतने पर होता है। मिजो कथा में मृग है परंतु मारीच नहीं। इस कथा में सुग्रीव और हनुमान एक को ही बताया गया है। रामायण के कुछ प्रसंग इसमें जुड़े हुए हैं यथा अहिरावण की कथा, लंका दहन, सीता को अंगूठी देना और संजीवनी लाना इत्यादि।

यद्यपि जनजातीय स्वरूप पाकर कथा में विस्तृत बदलाव है, तथापि यह स्पष्ट है कि राम, सीता और लक्ष्मण भारत के प्रत्येक कोने में पूज्य हैं। राम भारतीय संस्कृति के अमिट अंग हैं। इनके स्वरूप अलग हैं, कहीं दैवीय रूप है तो कहीं नायक के रूप में पर विद्यमान प्रत्येक क्षेत्र में हैं। रामकथा पूर्वोत्तर में कई जनजातियों में गाई जाती है। चूँकि पूर्वोत्तर का साहित्य मौखिक है। इस कारण हर पीढ़ी अपने अनुसार कथा में कुछ जोड़ती घटाती है और कथा में अंतर बढ़ता जाता है। मिजोरम में रामकथा का अपना विशिष्ट महत्व है।

माना जाता है कि मिजो रामकथा का मूल बौद्ध धर्म की कथाओं से है तथा यह पूर्वी एशिया का संस्करण है जो वाचिक परंपरा में मिजो समूह तक पहुँचा है। मिजो रामकथा में हालवामान (हनुमान) की कथा और सीता त्याग की कथा दक्षिण पूर्व एशिया की रामायण से प्राप्त लगती है न कि भारतीय रामायण से। खामती, खासी, गारो जयंतिया, कार्बी, तिवा, मेच, इत्यादि जनजातियों के रामकथा के अपने अपने संस्करण हैं, इन सभी में पर्याप्त अंतर है परन्तु राम सर्वत्र हैं।

पूर्वोत्तर को जानने के लिए पूर्वोत्तर की संस्कृति को जानना होगा। आज भी भारत अपने देश के इस हिस्से के प्रति अनजान है। अभी तक वह इस क्षेत्र को अपनेपन से स्वीकार नहीं कर पाते, जिसका परिणाम होता है अलगाववाद। दूसरी शक्तियाँ अपना प्रभाव बढ़ाती हैं। यही केन्द्रीय भारत का अनमनापन पूर्वोत्तर में हिन्दू संस्कृति को निरंतर क्षीण कर रहा है। हिन्दुत्व के मानने वाले निरंतर कम हो रहे हैं, जो मानते भी हैं उन्हें हिन्दुत्व से अलग बताने का षडयंत्र लगातार चल रहा है। इस षडयंत्र का परिणाम पूरे पूर्वोत्तर में हिन्दुओं और स्थानीय जनजातीय मान्यताओं को मानने वालों की संख्या में कमी हो रही है। इसाई और इस्लाम बढ़ रहा है। भारत सरकार जनजातीय समाज को भारतीय संस्कारों से जोड़ने का विरोध करती रही है, परंतु लगातार हो रहे इसाई धर्म परिवर्तन के प्रयासों को रोकने का कुछ भी प्रयास नहीं किया है। हिन्दू संस्कृति से जुड़ाव विद्वानों को जनजातीय समाज पर हमला लगता है, परंतु इसाई धर्म में परिवर्तन में उनकी आँखे मुँद जाती हैं। जरूरत है कि हम जनजातीय समाज को देश की मुख्यधारा से जोड़ें। उनकी संस्कृति प्राचीन भारतीय समावेशी संस्कृति में संरक्षित रह सकती है, विदेशी हड़प संस्कृति में नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. लालरुआंगा डा. एवं दत्ता बीरेन्द्रनाथ, रामा स्टोरी इन द मिजो ट्रेडीशन (अनपब्लिश्ड पेपर गुवाहाटी विश्वविद्यालय में 12 फरवरी 1988 में प्रस्तुत)
2. सांगकिमा, रामायना इन द नॉर्थ ईस्ट इंडिया-इम्पैक्ट ऑफ रामायना अपॉन मिजो, बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन दिल्ली, 2002
3. सिंह जे.पी.: प्रेसिडेन्सियल एड्रेस, एनईआईएचए, आईजोल, 1998
4. सांगकिमा, सम सोर्सेस ऑफ अर्ली मिजोरम हिस्ट्री: ए क्रोनोलॉजिकल स्टडी, नॉर्थईस्ट इंडिया हिस्ट्री एसोसिएसन प्रोसीडिंग(एनईआईएचए) जोरहाट, 1993

*(**लेखकीय परिचय:** डॉ. मुनीन्द्र मिश्र त्रिपुरा विश्वविद्यालय में सहायक निदेशक (राजभाषा) पद पर कार्यरत हैं।)*